# अध्यात्म तथा धर्म के मर्म को समझें

धर्म और अध्यात्म भारतीय संस्कृति की एक विशिष्ट विरासत है| लेकिन धर्म के वर्तमान स्वरूप को देखे तो ख्याल आता है कि धर्म आज कर्मकांड, पूजा-पाठ, मंत्र-तंत्र, देवदर्शन, तीर्थयात्रा, आरती-अर्चन से अधिक कुछ नहीं रहा है। धर्म का सच्चा अर्थ तो "**धारयति इति धर्म**" होता है| अर्थात् आप अपने वास्तविक जीवन में जो संयम-नियम, गुणों, शक्तियों अथवा मूल्यों को धारण करते हैं तथा त्याग, तपस्या, सेवा को अपनाते हैं - वही सच्चा धर्म है। स्वयम् को धर्मनिष्ठ कहलाने वाले लोगों में आज ऐसी धारणाएं और मान्यताएं बहुत कम देखी जाती हैं और इससे विपरित वे धर्म के उपरोक्त वर्तमान स्वरूप में अधिक व्यस्त दिखाई देते हैं।

धर्म के इस स्वरूप के संदर्भ में अध्यात्म तथा धर्म के बीच कोई विशेष संबंध दिखाई नहीं देता है। आज के इस संदर्भ में अध्यात्म क्या है? धर्म क्या है? दोनों के बीच अंतर क्या है? इन बातों को समझना अति आवश्यक है। चलिये, हम इसे समझने का प्रयास करें। वर्तमान स्थिति में अध्यात्म और धर्म के बीच बहुत बड़ा अंतर दृष्टिगोचर होता है। कुछ मुख्य अंतर निम्नलिखित हैः

- अध्यात्म एक पराभौतिक (मेटाफिझिकल) विज्ञान है। आध्यात्म विज्ञान के सिद्धांत शाश्वत और सनातन होते हैं। समयान्तर या स्थानान्तर होने से उनमें कोई परिवर्तन नहीं होता है। इसके विपरीत धर्म, आस्था और श्रद्धा का विषय बन गया है। समय और स्थान परिवर्तन के साथ श्रद्धा-आस्था में भी परिवर्तन होता रहता हैं।
- अध्यात्म मुक्त स्वरूप से बहने वाला शाश्वत ज्ञान है जो व्यक्ति को दिव्यता प्रदान करता है, जबकि धर्म एक निश्चित ढांचे में बंधा हुआ होता है।
- अध्यात्म जीवन की श्रेष्ठता के लिये व्यक्तिगत पुरुषार्थ की बात है, जबकि धर्म एक संस्थाकीय प्रवृत्ति बन गई है।
- अध्यात्म में समानता की अवधारणा है जो व्यक्ति में समत्व और बंधुत्व का आत्मिक और वैश्विक भाव पैदा करता है, जब कि धर्म में एक व्यक्ति विशेष का एकाधिकार होता है, गुरू परंपरा होती है, गुरू–गद्दी होती है। अनुयायी उस विशेष व्यक्ति का अनुकरण करते हैं।
- अध्यात्म व्यक्ति को हर प्रकार के बंधनो से मुक्त करता है। अध्यात्म में सभी बातों से उपराम होने की बात होती है। इसके विपरित धर्म में अनेक प्रकार के धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक बंधन और नियंत्रण होते हैं। धर्म निश्चित प्रकार की संस्कृति द्वारा परिभाषित होता है।
- अध्यात्म सबको एक करता है तथा **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** का भाव पैदा करता है, जबकि आज का विश्व विविध धर्मों तथा सम्प्रदायों में विभाजित हो गया है।
- अध्यात्म सभीको छूता है, सबके लिये समान रुप से उपयोगी है, जबकि धर्म किसी निश्चित मानव समुदाय के लिये

काम करता है और उनके लिये सीमित रूप से उपयोगी होता है।

- अध्यात्म एक संयुक्त–सामुदायिक **(inclusive)** प्रवृत्ति है, जबकि धर्म एकांतिक या विशिष्ट **(exclusive)** प्रवृत्ति है।

धर्म और अध्यात्म के प्रवर्तमान स्वरूप के उपरोक्त अंतर को विश्व की हरेक आत्मा को अपने उत्कर्ष के लिये समझने की जरुरत है। वर्तमान समय हम भले ही धार्मिक हों लेकिन धर्म का सच्चा अर्थ सार्थक करने के लिये अध्यात्म के शाश्वत सत्यों को समझना बहुत ही आवश्यक है। आज विश्व का नैतिक अधःपतन जिस हद तक हुआ है, जिस हद तक विश्व अनेक वैश्विक समस्याओं का सामना कर रहा है, उनका रामबाण इलाज केवल आध्यात्मिक विवेक **(Spiritual Wisdom)** में समाया हुआ है।

आध्यात्मिक विवेक के विकास के लिये **अध्यात्म क्या है**? **उसके विविध आयाम क्या हैं**? **उसके शाश्वत सिद्धांत कौन से हैं**? जैसे प्रश्नों का समाधान पाना या उन्हें समझना वर्तमान समय की मांग **(Call of Time)** है और आज के समय की आवश्यकता **(Need of the Day)** है।

हम पहले देख चुके हैं कि अध्यात्म एक सचोट विज्ञान है, जिसके सिद्धांत शाश्वत हैं, सनातन हैं। इस अध्यात्म विज्ञान के मुख्य तीन पहलू हैं।

**१. आत्मा २. परमात्मा ३. सृष्टि अथवा**
**१. जीव २. जगत ३. जगदीश अथवा**
**1. Man 2. Matter 3. God**

इन तीनों बातों की स्पष्ट तथा सत्य समझ से व्यक्ति आध्यात्मिक रुप से जागृत होता है और इसके लिये निम्नलिखित तीन प्रश्नों के स्पष्ट उत्तर व्यक्ति के पास होने चाहिये।

**आत्मज्ञान**:-

शरीर और आत्मा का भेद क्या है? आत्मा कौन है और कैसी है? आत्मा का स्वरूप क्या है? शरीर में आत्मा का स्थान कहाँ है? आत्मा की क्रियात्मक शक्तियाँ – मन, बुद्धि और व्यक्तित्व क्या हैं? आत्मा की मूलभूत प्रकृति क्या है? क्या आत्मा निर्लेप है? आत्मा कहाँ से आई है? आत्मा का सृष्टि-रूपी नाटक में क्या प्रयोजन है?

**परमात्मा की सत्य संकल्पन**:-

परमात्मा का अस्तित्व है भी या नहीं? परमात्मा के बारे में विरोधाभासी मान्यताएँ क्या क्या हैं? परमात्मा आखिर हैं कौन? परमात्मा कैसे हैं? क्या वे नाम, रूप, देश और काल से परे हैं । परमात्मा रहते कहाँ हैं? परमात्मा से हमारा वास्तविक नाता क्या है और कैसा है? क्या आप स्वयं परमात्मा के दिये हुए स्वयं के परिचय को जानते हो? क्या आप आत्मा और परमात्मा के बीच के साम्य और वैषम्य को जानते हो? परमात्मा के कर्तव्य क्या हैं? वे उन्हें कैसे पूरा करते हैं? क्यों करते हैं? कब करते है?

**सृष्टि नाटक**:-

यह सृष्टि-रूपी नाटक किनके बीच खेला जा रहा है? यह किन सिद्धांतों पर खेला जा रहा है? नाटक का आदि, मध्य और अंत क्या है? विविध **सृष्टि अथवा** की भूमिका क्या है? वे उन भूमिकाओं को कब और कैसे पूरा करती हैं? इस नाटक में स्वयं परमात्मा की भूमिका कब है? क्या है? किस रूप में है?

इन प्रश्नों का उत्तर पाना हो तो अध्यात्म विज्ञान की शिक्षा तथा आध्यात्मिक अभ्यास की आवश्यकता है। हमारे आज के विश्वविद्यालय केवल भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, मनोविज्ञान, समाज शास्त्र जैसे विषयों की शिक्षा देते हैं, लेकिन अध्यात्म विज्ञान की शिक्षा देने वाली संस्थाएं बहुत ही कम हैं?

इन संस्थाओं में सबका ध्यान खींचने वाला कोई महत्वपूर्ण विश्वविद्यालय हें तो वह **'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय'** है। विश्व के 160 से भी अधिक देशों में विस्तृत यह एक सच्चे अर्थ में वैश्विक विश्वविद्यालय है जो अपने 8,500 से भी अधिक सेवाकेन्द्रों द्वारा अध्यात्म विज्ञान के सिद्धांतों की निःशुल्क शिक्षा प्रदान करता है। जो भी व्यक्ति अपने जीवन को मूल्यनिष्ठ और चरित्रवान् बनाना चाहता हो, जीवन में सच्चा सुख, सच्ची शांति तथा शक्ति प्राप्त करना चाहता हो, अपने हरेक संबंध की खुशबू का आनंद उठाना चाहता हो, ईश्वर के साथ संबंध जोड़कर ईश्वर की अनुभूति करना चाहता हो तो उसे इस विश्वविद्यालय की मुलाकात

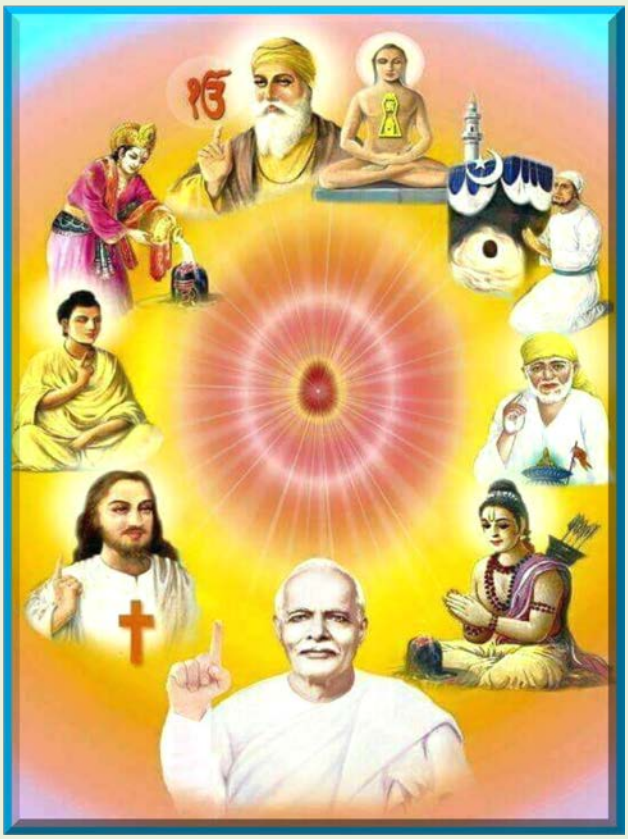

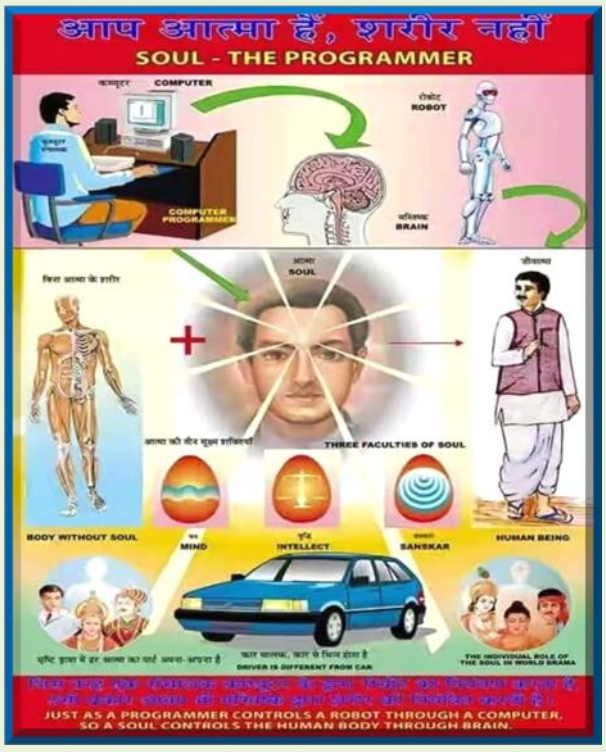


अवश्य लेनी चाहिये।

------- 0000 -------

**ब्रह्माकुमार प्रफुल्लचंद्र;**

**मो. + 919825892710**